SHRI DASARI KONDAPPA

Shri Dasari Kondappa, is a famous Burraveena player. He is said to be one of the last remaining Burraveena players in Telangana who dedicated his life to preserving the art form for over 50 yrs.

2. Born on 1st January, 1960, Shri Kondappa belongs to the Damaragidda Mandal of Narayanpet District in Telangana State. He leads nomadic life playing the Burraveena, an indigenous stringed instrument created by using bamboo, gourd shell and metal. He is expert in playing themes from Puranas, Itihasas, family system and notably contemporary social issues. Like his forefathers, he too made his livelihood with the Burraveena, playing songs and telling stories.

3. Shri Kondappa learnt the themes from Ramayana and Mahabharata from his blind brother which is the testimony of his passion towards the art of Burraveena. He sings Tatavalu, socio-religious moral compositions and Spiritual philosophical renditions in Telugu and Kannada. The custom of Burraveena artists is to play within their own community which is the impediment in making it enter into society that might be the reason that people never came to him to learn it. Inspite of this limitations, he went beyond to attract wider audience.

4. Shri Kondappa's contribution in keeping alive the indigenous rural art form has been commendable.

श्री दासरी कोन्डप्पा

श्री दासरी कोन्डप्पा एक सुप्रसिद्ध बुर्रावीणा वादक हैं। वह तेलंगाना के अंतिम बुर्रावीणा वादकों में से एक हैं। उन्होंने इस कला को संरक्षित करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है, और 50 वर्ष से अधिक समय से इसके लिए प्रयासरत हैं।

2. 01 जनवरी, 1960 को तेलंगाना राज्य में नारायणपेट जिले के दमरगिड्डा मंडल में जन्मे श्री कोन्डप्पा बांस, लौकी के खोल और धातु का उपयोग करके बनाए गए एक स्वदेशी स्ट्रिंग वाद्य बुर्रावीणा बजाते हुए खानाबदोश जिंदगी जीते हैं। वह पुराण, इतिहास, पारिवारिक व्यवस्था और विशेष रूप से समकालीन सामाजिक मुद्दों पर आधारित धुन बजाने में विशेषज्ञ हैं। अपने पूर्वजों की तरह, उन्होंने भी बुर्रावीणा बजाने, गीत गाने और कहानियां सुनाने को अपनी आजीविका बनाया।

3. श्री कोन्डप्पा ने अपने दृष्टिहीन भाई से रामायण और महाभारत के काव्य–गीत सीखे जो बुर्रावीणा की कला के प्रति उनके जुनून का प्रमाण है। वह तेलुगु और कन्नड़ में तातवलु, सामाजिक–धार्मिक नैतिक रचनाएं और आध्यात्मिक दार्शनिक गीत गाते हैं। बुर्रावीणा कलाकार अपने समुदाय में ही गायन और वादन करते हैं, जिस कारण यह वृहत्तर समाज में लोकप्रिय नहीं हो पाया है और इस कारण से लोग इसे सीखने उनके पास नहीं आए। इन सीमाओं के बावजूद, उनका व्यापक श्रोता वर्ग है।

4. इस देशी ग्रामीण कला को जीवित रखने में श्री कोन्डप्पा का सराहनीय योगदान रहा है।